36

क्या आप मरने को तैयार हैं?

(11:7-14)

जैसा कि डब्ल्यू. बी. वेस्ट ने एक बार लिखा था कि प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय कलीसियाओं में की जाने वाली घोषाणाएं आज की कलीसियाओं में होने वाली घोषणाओं से बहुत भिन्न होंगी।[1] आज हम मण्डलियों में इकट्ठे खाने, युवाओं के कार्यक्रमों, वर्कशॉपों आदि की घोषणा करते हैं। पहली शताब्दी की कलीसियाओं में होने वाली घोषणाओं में शिमौन की मृत्यु का समाचार, जो मसीह का इनकार न करने के कारण मारा गया था; ''प्रभु परमेश्वर कैसर'' न कहने के कारण मरियम के कारावास तथा नन्हे जोशुआ के लिए नये घर की आवश्यकता की घोषणा होगी, जिसके माता-पिता शहीद हो गए थे।

मन्दिर को नापने पर अपने पाठ में हमने ज़ोर दिया था कि परमेश्वर ने अपने लोगों की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की थी। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें सताया नहीं जाना था। यदि सब पर नहीं तो अधिकतर पर तो कष्ट आना ही था। कुछ ने तो मर ही जाना था। इस सच्चाई को अध्याय 11 वाले दो गवाहों की कहानी से स्पष्ट समझाया गया है।

पिछले पाठ में हमने उन तीन तथ्यों पर चर्चा की थी, जो परमेश्वर के गवाह होने के बारे में आपको पता होने आवश्यक हैं।[2] इस पाठ में हम दो और बातें जोड़ेंगे।

लोग आपकी हत्या कर सकते हैं (11:7-10)

दो गवाहों को दी गई परमेश्वर की शक्तियों के बारे में पढ़ने के बाद, आप आयत 7 से चकित हो सकते हैं: ''और जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा,[3] उनसे लड़कर[4] उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा'' (आयत 7)। (चौक में पड़े दो गवाहों के शव का चित्र देखें।)गवाही देने के बारे में चौथी सच्चाई जो आपको पता होनी आवश्यक है, वह यह है कि अपना काम करने के लिए परमेश्वर द्वारा मसीही लोगों की रक्षा करने के बावजूद वह रक्षा विशेष उद्देश्य के लिए है अर्थात कई तरह से हम भेद्य या असुरक्षित रहते हैं। जैसा कि आयत 7 से बताया गया है, हमारी हत्या भी हो सकती है।[5]

आयत 7 में हत्या के लिए ज़िम्मेदार को ''पशु'' कहा गया है। पुस्तक के दूसरे भाग में मुख्य कारक होने वाले इस जीव का[6] परिचय लापरवाही से करवाया गया है।[7] अध्याय

13 और 17 से पहले हमें इस पशु के बारे में विस्तार से नहीं बताया जाएगा। प्रकाशितवाक्य में यह बहुत सामान्य है। 2 और 3 अध्यायों में कई विषयों का परिचय पुस्तक में आगे प्रसिद्ध होने के बावजूद बिना व्याख्या के दिया गया है, जैसे ''नये यरूशलेम का नाम, जो मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से उतरने वाला है'' (3:12; देखें 21:2)। इसी प्रकार 14:8 में बाबुल या बेबिलोन के गिरने की घोषणा है, चाहे अध्याय 17 तक बाबुल का कोई परिचय नहीं दिया गया (देखें आयत 5) और अध्याय 18 तक उसे नष्ट भी नहीं किया गया (देखें आयतें 2, 10, 21)।

यूहन्ना ने काफी देर बाद तक पशु के बारे में विस्तार से नहीं बताया, इसलिए मैं उसी के पीछे-पीछे चलूंगा।[8] अभी के लिए उस पशु को ''*अथाह कुण्ड* में से निकलने वाले'' परमेश्वर के शक्तिशाली शत्रु के रूप में पहचानना काफी होगा। पांचवीं तुरही और टिड्डियों वाले पाठ में हमने ज़ोर दिया था कि अथाह कुण्ड ''आग और गंधक की झील'' नहीं है, जो ''शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है'' (प्रकाशितवाक्य 20:10; देखें मत्ती 25:41), बल्कि यह पृथ्वी के तल अर्थात उस जगह जहां दुष्ट आत्माएं न्याय की प्रतीक्षा करती हैं, भयानक जीवों से भरी पृथ्वी के नीचे की गुफ़ा तक जाते एक खम्भे का संकेत है[9]।

बसन्त ऋतु के आने पर सुस्त पड़े जीवों के नींद से जाग उठने की तरह वचन के प्रचार से वह पशु जाग गया और वह घातक उद्देश्य से भयानक गड्हे से बाहर निकल आया। क्या वह आग उगलने वाले, मौसम को नियन्त्रित करने वाले और शक्तिशाली आश्चर्यकर्म करने वालों के विरुद्ध सफल हो सकता था? हां, क्योंकि यूहन्ना ने कहा कि वह पशु ''उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा'' (आयत 7)।

हम यह पुकारने की परीक्षा में पड़ते हैं कि ''हे परमेश्वर, तू ने ऐसा क्यों होने दिया?'' वचन का हमारा पाठ आंशिक उत्तर देता है। आयत 7 के आरम्भ से पढ़ें, ''जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे।[10]'' वह पशु उन दो गवाहों को मारने में सक्षम था,*परन्तु उनका काम पूरा होने से पहले नहीं*। अन्य शब्दों में पशु ने भविष्यवक्ताओं को मार डाला, परन्तु उनकी गवाही को नहीं।

क्योंकि मैंने सुझाव दिया है कि यूहन्ना के समय दो गवाह वचन को फैलाने वाले सभी विश्वासी मसीहियों को कहा गया है, इसलिए हम आयत 7 को पहली शताब्दी के संदर्भ में रखते हैं कि[11] क्या मसीही प्रचारकों तथा शिक्षकों को मारा जा रहा था? हां। क्या इससे उनकी गवाही खत्म हो गई? नहीं, क्योंकि परमेश्वर का वचन तो आज तक जीवित है और जब तक संसार रहेगा, तब तक रहेगा। परमेश्वर के शत्रु सुसमाचार के बढ़ने को रोक नहीं पाए थे और न ही कभी रोक पाएंगे। परमेश्वर ने यह घोषणा की है कि सच्चाई की ही विजय होगी[12]!

उस पशु द्वारा दो गवाहों को मार डालने पर ऐसा नहीं*लगा कि* सच्चाई की विजय हुई, बल्कि *लगा* कि बुराई जीत गई है। 8 से 10 आयतों में पशु द्वारा मारे गए दो गवाहों की यह तस्वीर दी गई है:

> ... उनकी लोथें[13] उस बड़े[14] नगर के चौक में पड़ी रहेंगी, जो आत्मिक रीति से

सदोम और मिस्र कहलाता है, जहां उनका प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था। और सब लोगों, और कुलों, और भाषाओं, और जातियों में से लोग उनकी लोथें साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे और उनकी लोथें कब्र में रखने न देंगे। और पृथ्वी के रहने वाले, उनके मरने से आनन्दित और मगन होंगे, और एक-दूसरे के पास भेंट[15] भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों भविष्यवक्ताओं ने पृथ्वी के रहने वालों को सताया था। (चौक में पड़े दो गवाह का चित्र देख।)

प्रेरित के शब्दों से एक अद्‌भुत दृश्य चित्रित होता है। हैनरी स्वेट ने कहा है, ''दर्शकों का आनन्द ... एकदम अति दुष्ट और बचकाना लगता है।''[16] पृथ्वी के रहने वालों को उन गवाहों को दफ़नाने की अनुमति नहीं मिली।[17] इसके बजाय उन्होंने उन्हें चौक के बीच में कीड़ों, आवारा कुत्तों और मांसखोर पक्षियों के खाने के लिए छोड़ दिया।

किसी व्यक्ति पर सबसे बड़ी त्रासदी उसकी लाश को गाड़ा न जाना था। (देखें भजन संहिता 79:1-3; यशायाह 5:25; यिर्मयाह 8:1, 2.) मुझे जवानी के समय का ओक्लाहोमा में लगने वाला मेला याद है, जिसमें मैंने एक डरावनी प्रदर्शनी देखी थी। कीचड़ वाले तम्बू के अन्दर भयंकर तस्वीरें और मोम की मूर्तियों में दिखाया गया था कि किस प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्त में अपराधियों के शव चौकों में फैंके गए थे।

दोनों गवाहों के शव चौक में फैंके जाने पर,[18] संसार भर से अविश्वासी[19] लोग उन्हें घूरने और जश्न मनाने के लिए आए। ऐसे ही जब लगता है कि सच्चाई घिर रही है तो बुराई आनन्द करती है। इसी तरह जब लगता है कि विजय मिल गई तो दुष्ट ललचाई आंखों से देखता है[20]

इस भयानक दृश्य से आगे बढ़ने से पहले, मुझे उस स्थिति के बारे में कुछ कहना है: ''उनके शव उस बड़े नगर के चौक में पड़े रहेंगे जो आत्मिक रूप से सदोम और मिस्र कहलाता है, जहां उनका प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था'' (आयत 8)।

कई लोग यह मानते हैं कि नगर पृथ्वी के यरूशलेम को कहा गया है, क्योंकि इस आयत में इसे उस स्थान के रूप में पहचाना गया है ''जहां उनका प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था।'' परन्तु माइकल विल्कोक ने सही प्रश्न पूछा था कि यदि ''सदोम'' और ''मिस्र'' के नाम अलंकारिक रूप में इस्तेमाल किए गए हैं तो '' 'नगर ... जहां उनका प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था' को भी अलंकारिक क्यों नहीं होना चाहिए?''[21] जैसे इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने ध्यान दिलाया है कि मनुष्य का पुत्र बार-बार क्रूस पर चढ़ाया जाकर लज्जित होता है (इब्रानियों 6:6)।

जी. बी. केयर्ड ने ध्यान दिलाया कि ''यूहन्ना ने इसी वाक्यांश *बड़े नगर* का इस्तेमाल और सात बार किया है [16:19; 17:18; 18:10, 16, 18, 19, 21] और हर जगह संदर्भ से यह स्पष्ट हो जाता है कि इशारा रोम की तरफ है।''[22] विशेषकर अन्य चार स्थानों पर इस वाक्यांश को ''बाबुल'' के लिए इस्तेमाल किया गया है, सो अध्याय 11 को इस शब्द के लिए हमें मुख्य व्याख्या के रूप में मानना चाहिए। जैसा कि हम देखेंगे, प्रकाशितवाक्य में इस्तेमाल हुए रोम नगर के लिए गुप्त अर्थ वाले शब्द के रूप में ''बाबुल'' का इस्तेमाल किया गया है और रोम नगर दो गवाहों के वृत्तांत के साथ सही मेल खाता है (देखें 18:24)।

अध्याय 11 के ''बड़े नगर'' को संसार के केवल एक स्थान तक सीमित करने को प्रति हमें सजग रहना चाहिए। मार्टिन फ्रैंजमैन ने कहा है कि '' 'बड़ा नगर' ... हर और किसी भी स्थान का जहां लोग 'परमेश्वर के पुत्र को ठुकराते और वाचा के उस लहू को जिससे उन्हें पवित्र किया गया था, तुच्छ जानते और अनुग्रह के आत्मा का अपमान करते हैं' प्रतीक है ([इब्रानियों] 10:29)।''[23]

आयत 8 में बताए गए तीन स्थान ''बड़े नगर'' के *स्वभाव* की बात करते हैं: यह ''*सदोम* की बुराई, *मिस्र* के फिरौन के अत्याचार, यरूशलेम के आज्ञा न मानने वालों की संतान है।''[24] इससे भी बढ़कर, तीन स्थान नगर के *भविष्य* के बारे में बताते हैं: सदोम, मिस्र और यरूशलेम सब ने परमेश्वर के न्याय को महसूस किया था और हम देखेंगे कि उस ''बड़े नगर'' का भी न्याय हुआ!

अन्ततः परमेश्वर आपको प्रतिफल देगा! (11:11-13)

दो लाशों के आस-पास आनन्द का माहौल परेशान करने वाला है। यदि हमें कहानी के अन्त का पता न हो, तो हम यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बुराई की शक्तियां अजेय हैं। फिर हम दोबारा वचन में देखते और उस वाक्यांश पर नज़र मारते हैं, जिसे आसानी से अनदेखा कर दिया जाता है: ''सब लोगों और कुलों और भाषाओं और जातियों के लोग उनके शवों को *साढ़े तीन दिन तक* देखते रहेंगे'' (11:9)। ''साढ़े तीन दिन तक''-*केवल* ''साढ़े तीन दिन'' तक।

फिर ''3-1/2'' का सांकेतिक अंक आ गया, जो कल की आशा के संकेत के साथ परीक्षा, कठिनाई और परख से जुड़ा हुआ है। आयत 9 का अंक मुख्य रूप से पहले इस्तेमाल किए गए अंक से भिन्न है: गवाहों ने 3-1/2 *वर्ष* गवाही दी (11:3), परन्तु वे केवल 3-1/2 *दिन* तक ही मरे रहे। कोई भी अंक शाब्दिक नहीं है; बल्कि वह समय की *लम्बी* अवधि की तुलना में समय की *अल्प* अवधि है। अन्तर से यह घोषणा होती है कि दुष्ट की विजय *थोड़ी देर की* है!

प्रभु के लिए गवाही देने के बारे में पांचवीं बात जो आपको पता होनी चाहिए, वह यह है कि यदि आप स्थिर रहते हैं तो अन्त में आपके लिए सब कुछ ठीक हो जाएगा। हमने (1) भलाई और बुराई में झगड़ा और (2) भलाई की स्पष्ट हार देखी है। अब (3) भलाई की अन्त में विजय को देखने का समय है।

शवों के आस-पास भौतिक आकाश के घूमने से ऐसा लगा जैसे सब कुछ खत्म हो गया। परमेश्वर के दूत शांत हो गए थे; केवल दुष्ट की क्रूर हंसी ही सुनाई दे रही थी। परन्तु अन्त में हमेशा परमेश्वर ही हंसता है। जब दुष्ट लोग भलाई और पवित्र के जाने का जश्न मनाते हैं, ''तो उनकी पार्टी के बीच में ही खलल पड़ जाता है।''[25]

अपने मन में उस नाटकीय दृश्य की कल्पना करें: ''और साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा[26] उन में पैठ गई; और वे अपने पांवों के बल खड़े हो गए'' (आयत 11क)।

सदियों पहले यहेजकेल भविष्यवक्ता को सूखी हड्डियों वाली एक सूखी घाटी दिखाई गई थी, जो इस्राएलियों को दर्शाती थी, जो निराशा से हार गए थे। उस भविष्यवक्ता के देखते-देखते हड्डियां आपस में टकराने लगीं। हड्डियां इकट्ठी होकर ढांचे बन गईं। ढांचों पर मांसपेशियां और चमड़ी चढ़ गई। अन्त में, ''सांस उन में आ गई, और वे जीकर अपने-अपने पांवों के बल खड़े हो गए'' (यहेजकेल 37:10)। यहेजकेल के दर्शन का अर्थ था कि हालात चाहे कितने भी निराशाजनक लगते हों, परमेश्वर उन्हें उलट सकता है। वैसे ही यूहन्ना के दर्शन में सताव सहने वाले मसीही लोगों से कहा गया, ''कितना भी बुरा क्यों न हो जाए, आशा हमेशा रहती है! परमेश्वर अपने लोगों को विजय दिलाएगा ही!''

यूहन्ना के दर्शन में प्रतिज्ञा की गई कि रोम चाहे कितने भी हज़ारों लोगों को मार डाले, जंगली जानवरों द्वारा या भट्ठी में जलाकर मार दे, चाहे एम्फीथियेटर का रेतीला फर्श कितना भी लहू सोखे, परन्तु रोमी सरकार सच्चाई को बढ़ने से रोक नहीं सकती; यह कलीसिया को खत्म नहीं कर सकती थी।

व्यापक प्रासंगिकता बनाई जा सकती है: संसार की *कोई भी* शक्ति परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को बदल नहीं सकती। सदियों से कइयों ने कोशिश की है और सभी असफल रहे हैं। यह दर्शन ''वही बताता है, जिसकी इतिहास पुष्टि करता है कि कलीसिया की आवाज़ को शांत नहीं किया जा सकता।''[27] विलियम कलेन ब्रायंट के शब्दों में, ''पृथ्वी पर कुचले जाने के बावजूद सच्चाई फिर से जी उठेगी।''[28]

यशायाह ने लिखा है, ''घास तो सूख जाती, और फूल मुरझा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा'' (यशायाह 40:8)। यीशु ने कहा है, ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (मत्ती 24:35)। अविनाशी वचन राज्य का ''बीज'' है (लूका 8:11; देखें मत्ती 13:19) इसलिए यीशु की बात का भी अर्थ यही है कि उसका राज्य/कलीसिया (मत्ती 16:18, 19) कभी नष्ट नहीं हो सकता। यहां तक कि ''अधोलोक के फाटक भी उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)।

दो गवाहों के ऐसे उठने पर जैसे वे तीन दिन सोने के बाद उठे हों आप जश्न मनाने वालों पर पड़ने वाले प्रभाव की कल्पना कर सकते हैं? आयत 11 कहती है कि ''उन के देखने वालों पर बड़ा भय छा गया'' (आयत 11ख)। पृथ्वी वासियों के डरने का कारण था। ''हत्या मनुष्य का अन्तिम आश्रय है, तो मरे हुओं में से जी उठने वालों का क्या किया जा सकता है!''[29] सच्चाई के लचीलेपन से संसार हमेशा अचम्भित और स्तब्ध होता है।

फिर गवाहों को ''स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुनाई दिया कि यहां ऊपर आओ; यह सुन वे बादल पर सवार होकर ... स्वर्ग पर चढ़ गए'' (आयत 12)। (पृष्ठ 129 पर स्वर्ग में ऊपर जाते दो गवाहों का चित्र देखें।) परमेश्वर के पास हमेशा अन्तिम शब्द रहता है और अपने गवाहों के लिए उसके अन्तिम शब्द हैं कि ''यहां ऊपर आओ''! इससे यीशु के स्वर्ग पर उठाए जाने की बात ध्यान में आती है, जो बादल में स्वर्ग पर गया था (प्रेरितों 1:9)।[30]

इस प्रकार आरम्भिक मसीहियों को आश्वासन दिया गया था कि अपने विश्वास के लिए यदि वे मर भी जाएं तौ भी यह व्यर्थ नहीं होगा; परमेश्वर का काम जारी रहेगा। इसके

अलावा उन्हें यह आश्वासन मिला था कि प्रभु उन्हें भुलाएगा नहीं! वह उन्हें उठाकर अपने साथ घर ले जाएगा!

क्या आयत 12 प्रभु के लौटने पर शारीरिक पुनरुत्थान का चित्रण है? (1 थिस्सलुनीकियों 4:17, 18; 1 कुरिन्थियों 15:51-54.) शायद। अधिक सम्भावना है कि यह उसे दर्शाती है, जिसे आगे ''पहला पुनरुत्थान'' (प्रकाशितवाक्य 20:5, 6) अर्थात मसीही युग में मसीह के साथ रहना और राज्य करना (20:4) कहा गया है।[31] मैं बाद वाली व्याख्या को तीन कारणों से प्राथमिकता देता हूं: (1) अपने अध्ययन में हम अभी तुरही (चेतावनी) के भाग में हैं और अन्तिम (7) तुरही प्रकाशितवाक्य 11:14, 15 तक नहीं बजती। (2) अगली आयतें तुरही (चेतावनी) की भाषा से जुड़ी हुई हैं। आयत 13 में नगर का ''केवल'' दसवां भाग गिरा; ''केवल'' सात हज़ार लोग मारे गए, जबकि अधिकतर मनुष्य (''शेष'') नहीं।[32] (3) यह सांकेतिक भाषा का इस्तेमल करते हुए दर्शन है।

तौ भी आयत 12 में दर्शाया गया पुनरुत्थान और स्वर्ग पर उठाया जाना हमें शारीरिक पुनरुत्थान की आशा देता है। शायद हम कह सकते हैं कि यह आयत विश्वासियों की आत्माओं ''मसीह के साथ होने'' के लिए अलग होने का *आंशिक* पूरा होना है (फिलिप्पियों 1:23)। *अन्तिम* पूरा होना तब होगा जब हमारी निर्बल देहों को सामर्थ में जिलाया जाएगा, जब हमारी नाशवान देहें अविनाशी होकर जी उठेंगी, जब हमारी दीन हीन देहों को महिमा में जिलाया जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:42-44, 52, 53)।

दो गवाह ''अपने बैरियों के देखते-देखते'' बादल पर उठा लिए गए। ''फिर उसी घड़ी एक बड़ा भुईंडोल हुआ, और नगर का दसवां अंश गिर पड़ा; और उस भुईंडोल से सात हज़ार मनुष्य मर गए'' (आयतें 12ख, 13क)। परमेश्वर पश्चात्ताप न करने वालों पर अभी भी काम कर रहा था, सो बड़े नगर के दसवें भाग का विनाश और सात हज़ार लोगों का मरना हमारे लिए तुरही की चेतावनी है।

प्रकाशितवाक्य में ''दसवां'' अंश का केवल यहीं उल्लेख है।[34] माउंस ने लिखा है कि यह ''[नगर का] काफ़ी बड़ा भाग था, परन्तु इतना बड़ा नहीं कि इससे यह अयोग्य हो जाए।''[35] जिम मैक्गुइगन ने सुझाव दिया है कि ''दसवां अंश बोलता है, यह आंशिक भुगतान और शेष बाद में लगता है।''[36] ''सात हज़ार'' के सांकेतिक अंक का उल्लेख भी केवल यहीं है। ''सात'' और ''हज़ार'' दोनों सम्पूर्णता का संकेत देते अंक हैं[37] शायद यह अंक इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि इससे मनुष्यजाति को मिली परमेश्वर की चेतावनियां पूरी हो गईं। इसके बाद सातवीं तुरही बजनी थी (11:14, 15)। तब मन फिराने का समय नहीं होना था।[38]

जैसा कि तुरहियों की पूरी शृंखला में हुआ है कि परमेश्वर की मुख्य दिलचस्पी बचे हुए लोगों में थी। उन पर उसके न्यायों का क्या प्रभाव पड़ा? हम पढ़ते हैं, ''शेष[39] डर गए और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की'' (आयत 13ख)।

''स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की'' इसका क्या अर्थ है? अध्याय 9 में जब ''नरक की सेना'' ने ''एक तिहाई मनुष्यों को'' मार डाला, तो जो नहीं मरे थे, उन्होंने ''मन *न* फिराया'' (9:18, 20)। क्या अध्याय 11 वाले भूकम्प का परिणाम अलग था? क्या बच

जाने वालों ने मन फिराया? क्या उन्होंने प्रभु को ग्रहण करने के लिए मन बदला?

9:20, 21 और ऐसी आयतों की रोशनी में, यह विश्वास करना कठिन है कि डरकर परमेश्वर को महिमा देना इस बात का संकेत है कि बच जाने वालों ने सच्चे मन से मन फिराकर मन बदला था। उदाहरण के लिए, 13:3 से पता चलेगा कि "*सारी पृथ्वी* के लोग उस पशु के पीछे अचम्भा करते हुए चले।" इससे यह बिल्कुल नहीं लगता कि 11:13 में होने वाला मास कन्वर्शन था।[40] "स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की" वाक्यांश के सम्बन्ध में राजा नबूकदनेस्सर अक्सर यहोवा को महिमा देते हुए सिर हिलाता था (दानिय्येल 2:47; 3:28; 4:1-37), परन्तु निश्चय ही कोई इस बात को नहीं मानेगा कि नबूकदनेस्सर ने सच्चे मन से बदलकर विश्वास किया था। इसलिए मैं जिम मैक्गुइगन के साथ सहमत हूं कि "वे परिवर्तित नहीं हुए थे, केवल डरे थे।"[41]

दूसरी ओर, कुछ लोग यह ध्यान दिलाते हैं कि बाइबल में कहीं और (प्रकाशितवाक्य की अन्य आयतों सहित) आयत 13 में इस्तेमाल किए गए शब्द मन फिराव का संकेत दे*ते* हैं।[42] शायद यह आशा जताई जा रही थी कि *बहुत से* लोगों द्वारा परमेश्वर की चेतावनियों को सकारात्मक ढंग से न मानने के बावजूद *कुछ* लोग मानेंगे। आयत 13 के अन्तिम भाग में इसका यह अर्थ है या नहीं, परन्तु अनुभव से हमें यह मालूम है कि यह सत्य है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि परमेश्वर का भय न मानने वालों में भी कुछ लोग हैं, जिनके मनों को छुआ जा सकता है।

सारांश

दो गवाहों की कहानी से, हमने पांच तथ्य निकाले हैं, जो गवाही देने के बारे में आपको पता होने चाहिए: (1) परमेश्वर आपको शाबाशी देगा, चाहे (2) मनुष्य आप से घृणा करें; (3) परमेश्वर आपकी रक्षा करेगा, चाहे (4) लोग आपको मार डालें; (5) अन्त में, यदि आप विश्वासी रहें तो परमेश्वर आपको प्रतिफल देगा।

3 से 13 आयतों को फिर से पढ़ने के लिए समय निकालें। कुल मिलाकर आप पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? क्या यह विजय का प्रभाव नहीं है? "*हम विजयी हुए!*[43] कभी-कभी लग सकता है कि हम हार गए हैं, परन्तु अन्त में *जीत हमारी* ही होगी। मर भी जाएं, तौ भी, *जीत हमारी* ही है।" इन शब्दों को दोबारा ऊंचे स्वर में पढ़ें। कागज़ के एक टुकड़े पर लिखकर आप उन्हें किसी ऐसी जगह पर लटका दें, जहां से इन्हें दिन में कई बार पढ़ सकते हों। उस कागज़ के टुकड़े को अपने साथ ले जाएं। आपके और मेरे लिए परमेश्वर का यह सामर्थपूर्ण संदेश है कि *विजय हमारी* ही है!

गवाहों की कहानी छठी और सातवीं तुरहियों के बीच के अन्तराल को पूरा कर देती है। इसलिए आयत 14 घोषणा करती है, "दूसरी विपत्ति बीत चुकी; देखो तीसरी विपत्ति शीघ्र आने वाली है।" हम सातवीं तुरही की आयतों का अध्ययन करने के लिए तैयार हैं।

अन्त में, मुझे यह पूछना चाहिए कि "क्या आप सातवीं तुरही के बजने के लिए तैयार हैं?" क्या यह हो सकता है कि आप बिना सचमुच मन फिराए, बिना सचमुच परमेश्वर की

ओर मुड़े, उसकी महिमा को स्वीकार कर लें ? यदि आप मसीही हैं तो क्या यह भी हो सकता है कि आप प्रभु की सेवा में आधे-अधूरे मन से आएं ? यदि आज आपको यीशु के लिए मरने के लिए कहा जाए, तो क्या आप तैयार होंगे ? याद रखें कि परमेश्वर केवल विश्वासयोग्य रहने वालों को ही प्रतिफल देता है। केवल विश्वासयोग्य लोग ही सच्चाई से कह सकते हैं, ''हम विजयी हुए!'' यदि आपकी कोई आत्मिक आवश्यकता है, तो इस पर आज ही ध्यान दें![44]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

आयत 8 पर चर्चा करते हुए, ''बड़ा नगर'' पर चार्ट बनाएं। एक चार्ट जिसका इस्तेमाल आप कर सकते हैं, नमूने के रूप में दिया गया है:

''बड़ा नगर''		
स्थिति	**स्वभाव**	**भविष्य**
सदोम	दुष्ट	परमेश्वर द्वारा न्याय किया गया!
मिस्र	अत्याचारी	परमेश्वर द्वारा न्याय किया गया!
यरूशलेम	आज्ञा न मानने वाला	परमेश्वर द्वारा न्याय किया गया!

प्रकाशितवाक्य 11:3-14 पर सिखाने या प्रचार करने की और सम्भावनाएं इस प्रकार हैं: ''परमेश्वर के पास हमेशा अन्तिम शब्द होता है'' (''अन्तिम शब्द'' है ''ऊपर आ ...''); ''धुंधलापन और महिमा।'' चार्ल्स रायरी ने इस भाग को ''दो गवाह'' नाम देकर इसे चार हिस्सों में बांटा है: (1) उनका समय (आयत 3); (2) उनके काम (आयतें 4-6); (3) उनका अन्त (आयतें 7-10); (4) उनका स्थान परिवर्तन (आयतें 11-14)।[45] एल्बर्ट बालडिंगर ने अध्याय 11 को ''विजय की पुकारें'' शीर्षक से एक ही पाठ में बता दिया। उसकी रूपरेखा इस प्रकार है: (1) पुन: आश्वासन की पुकार (आयतें 1, 2); (2) अटल पुकार (आयतें 3-10); (3) एक विजयी पुकार (आयतें 11-14)।[46]

टिप्पणियां

[1]एडी क्लोर, प्रकाशितवाक्य पर अप्रकाशित लैक्चर नोट्स, तिथि नहीं। [2]आप चाहें तो तीनों तथ्यों की समीक्षा कर सकते हैं। [3]''निकलेगा'' यूनानी भाषा में वर्तमानकाल में है, जो निरन्तर क्रिया का संकेत देता है।

बुराई की शक्तियां उसके जो भला और सच्चा है, विरुद्ध उठती रहेंगी (देखें 17:8)। [4]इस युद्ध पर हम अध्याय 12 के अपने पाठों में विस्तार से चर्चा करेंगे; परन्तु अभी के लिए मैं यह जोर देना चाहता हूं कि (1) यह एक आत्मिक युद्ध है न कि शारीरिक और (2) यह एक बार होने वाला नहीं बल्कि चलता रहने वाला युद्ध है (देखें इफिसियों 6:12)। [5]लूका 10:19 में यीशु की प्रतिज्ञा देखें: उसने अपने चेलों से कहा कि ''किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।'' बाद में उनमें से कुछ अपने विश्वास की खातिर शहीद हो गए, परन्तु उनके *प्राण* ''घायल'' नहीं हुए थे। [6]''पशु'' के छत्तीस हवालों में से यह पहला है। [7]अंग्रेज़ी में पशु से पहले निश्चयात्मक उपपद (''the'') होने के कारण कई लोगों का यह मानना है कि पशु को यूहन्ना के पाठक जानते थे, परन्तु आवश्यक नहीं ऐसा ही हो। यूनानी धर्म शास्त्र में आयत 3 में ''मेरे दो गवाह'' है, परन्तु गवाहों का प्रतीक पाठकों के लिए नया होगा: दो गवाहों का रूपक अध्याय 11 से पहले या बाद में नहीं मिलता। [8]पशु की पहचान जानने के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की आगामी पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 4'' में पाठ ''देखो, सुनो और समझो'' देखें। आमतौर पर यह माना जाता है कि यह अथाह कुण्ड के राजा वाला पशु ही है (9:11), परन्तु आवश्यक नहीं कि ऐसा ही हो। (इस पुस्तक में 9:11 पर नोट्स देखें।) कई लेखक पशु को ''मसीह विरोधी'' के रूप में पहचानते हैं। इस पुस्तक में ''मसीह विरोधी और प्रकाशितवाक्य'' पाठ देखें। [9]इस पुस्तक में ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' पाठ देखें। [10]यूनानी शब्द का अनुवाद ''चुकेंगे'' यह संकेत देता है ''कि गवाही अपना लक्ष्य पा चुकी [थी]'' (लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री [ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1987], 145)।

[11]संकेतों तथा वास्तविकता के बीच अन्तर की संक्षिप्त व्याख्या सही रहेगी: यूहन्ना के दर्शन में, गवाहों ने पशु द्वारा उन पर आक्रमण करने से पहले अपना प्रचार *पूरा कर लिया।* वास्तविकता में बुराई की शक्तियां वचन को सिखाने वालों पर लगातार हमले करती हैं, जब वे सिखा रहे होते हैं *तब भी* (6:9-11 में मसीही लोगों की हत्या होते रहने के संकेत पर विचार करें)। इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। एक संकेत है जबकि दूसरा वास्तविकता है, परन्तु अन्त में परिणाम एक ही है। [12]देखें यशायाह 55:11. [13]8 और 9 आयतों में ''लोथें'' तीन बार मिलता है। मूल भाषा में, पहले दो हवाले एक वचन में हैं (मूलतः, ''लोथ'') जबकि तीसरा बहुवचन में (मूलतः, ''लोथें'')। स्पष्टतया पहले दोनों काम और गवाहों का भविष्य एक ही होने का संकेत देते हैं-वैसे ही जैसे हम एक ही तरह से प्रभावित होने वाले लोगों के लिए ''उनका दिल'' (एक वचन) कहते हैं। [14]अध्याय 11 में ''बड़ा'' शब्द को देखें कि कितनी बार आता है। ''बड़ा'' इस अध्याय का मुख्य शब्द है। [15]कुछ लोगों का विचार है कि ये ''भेंटें'' उनके पर्वों के भोजों का भाग थीं (देखें एस्तेर 9:19)। [16]हेनरी बी. स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैम्ब्रिज: मैकमिलन कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 138. [17]यह नहीं बताया गया कि उन लाशों को कौन दफ़नाना चाहता था क्योंकि विवरण से दृश्य में कोई बढ़ोतरी नहीं होती। दोस्त, या सहानुभूति रखने वाले गैर-मसीही लोग हो सकते हैं। (प्रेरितों 19:31 में कुछ गैर मसीह मित्रों ने पौलुस की रक्षा करने की कोशिश की थी।) [18]11:8 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''चौक'' वह शब्द है, जिसका मूल अर्थ ''चौड़ा'' या ''विशाल'' है (मत्ती 7:13 में इसका अनुवाद ''सरल'' किया गया है)। इसका मूल अनुवाद होगा ''चौड़ा [मार्ग]।'' नगर की मुख्य गली के लिए यही शब्द प्रचलित था। [19]''लोगों और कुलों और भाषाओं और जातियों'' (11:9) वाक्यांश का इस्तेमाल ''हर जगह सब मनुष्यों'' के लिए किया जाता है। इस पद में शब्दों का इस्तेमाल ''पृथ्वी के रहने वाले'' (11:10) वाक्यांश के साथ अदल-बदल कर किया गया है। (पृथ्वी के रहने वाले लोग अविश्वासी अर्थात गैर-मसीही थे।) [20]आपको चाहिए कि अपने सुनने वालों को कुछ ऐसे उदाहरण बताएं जिनसे वे परिचित हों। बर्टन कॉफ़मैन ने इतिहास से कई उदाहरण दिए (*कमैंट्री ऑन रैवलेशन* [ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979], 251-52)।

[21]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 106. [22]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 138. राबर्टर्स माउंस, *द बुक ऑफ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस

पब्लिशिंग कं., 1977) 226. [23]मार्टिन एच. फ्रैंज़मैन, *द रैवलेशन टू जॉन* (सेंट लुईस, मिज़ोरी: कॉनकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976), 80-81. [24]केयर्ड, 138. [25]यूजीन एच.पीटरसन, *रिवसर्ड थंडर* (सेन फ्रांसिस्को: हार्पर कोलिंस पब्लिशर्स, 1988), 115. जुडसोनिया चर्च के साथ मेरी क्लास में, जोयल डेविस ने टिप्पणी की कि ''उनकी परेड के दौरान बारिश हो गई।'' [26]देखें उत्पत्ति 2:7; 6:17; 7:15, 22. [27]एल्बर्ट एच. बाल्डिंगर, *प्रीचिंग फ्रॉम रैवलेशन: टाइमली मैसेजिज़ फॉर ट्रब्लड हार्ट्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1960), 55. [28]जॉन बार्टलैट, बार्टलैट स फैमिलियर कुटेशंस, सोलहवां अंक, सामान्य संस्क., जस्टिन कैप्लन (बोस्टन: लिटल, ब्राउन एण्ड कं., 1992), 411 में उद्धृत विलियम कूलन ब्रयंट, ''द बैटलफील्ड,'' 1839. [29]माउंस, 228. गवाहों का बादल में से स्वर्ग में जाना एलिय्याह के ऊपर उठाए जाने का स्मरण भी कराता है (2 राजा 2:11)।

[31]ट्रुथ फार टुडे की आगामी पुस्तक ''मसीह के साथ राज करना'' पाठ में 4-6 पर नोट्स देखें। [32]आयत 12 शारीरिक पुनरुत्थान की बात मानने वाले टीकाकार, आयत 13 की व्याख्या मसीह के लौटने पर सब कुछ नष्ट होने के चित्रण के रूप में करते हैं। परन्तु भाषा से ऐसा संकेत नहीं मिलता। इसी बात पर विश्वास करने वाले लोग कहते हैं कि कालक्रम के अनुसार आयत 13 12 से पहले आती है। यह हो सकता है, पर वचन को पढ़ने का यह स्वाभाविक ढंग नहीं है। [33]अध्याय 6 में हमने पहले एक भूकम्प देखा था, परन्तु हमने विचार किया था कि भूकम्प संसार के अंत में इस पृथ्वी के पूर्ण रूप से विनाश का चित्रण है। अध्याय 11 केवल आंशिक हानि करता है। भूकम्प के सांकेतिक महत्व के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में ''वह बड़ा दिन ... आ गया'' पाठ देखें। [35]माउंस, 229. [36]जिम मैक्गुइगन, द बुक आफ रैवलेशन, लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बाक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976), 163. ''शेष अदायगी'' से ''बड़ी नगर'' (बाबुल) के विषय में, अध्याय 18 देखें। [37]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशित वाक्य, 1'' में पृष्ठ 52 पर ''सात'' और ''एक हज़ार'' अंकों का सांकेतिक महत्व देखें। [38]कुछ लोगों का मानना है कि ''सात हज़ार'' संख्या का कोई विशेष सांकेतिक महत्व नहीं है। अर्थात यह बड़े नगर की आबादी का लगभग दसवां भाग था। अन्य यह ध्यान दिलाते हैं कि एलिय्याह के समय में सात हजार लोगों ने बाल को माथा टेका था (1 राजा 19:18); उनका मानना है कि प्रकाशितवाक्य 11 में सात हजार 1 राजा 19 वाले सात हजार का ''नकारात्मक रूप'' है। [39]KJV में ''remnant'' है, परन्तु मूल धर्मशास्त्र में ''विश्राम'' ही है (देखें NKJV)। [40]कुछ लोग अध्याय 11 वाले काल्पनिक ''मास कन्वर्शन'' को केवल यहूदियों तक सीमित करते हैं, परन्तु हमने पहले ही देखा है कि परमेश्वर की दिलचस्पी अब यहूदियों में भी उतनी ही है, जितनी किसी अन्य जाति के लोगों में। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 2:9 पर टिप्पणियों और ''प्रकाशितवाक्य, 2'' में 7:4-8 पर नोटस देखें।

[41]मैक्गुइगन, 163. [42]देखें यहोशु 7:6, 19; यशायाह 42:12; यिर्मयाह 13:16; लूका 18:13; 1 पतरस 2:12; प्रकाशितवाक्य 14:7; 15:4; 16:9. [43]इस सामग्री का इस्तेमाल क्लास या सरमन में करने पर उपयुक्त हो तो, सुनने वालों को अपने साथ ''हम जीत गए!'' शब्द दोहराने के लिए कहें। [44]यदि इस पाठ का इस्तेमाल सरमन के रूप में किया जाता है तो अपने सुनने वालों को बताएं कि प्रभु को कैसे ग्रहण करना है। इस पुस्तक में ''परमेश्वर के गवाह'' पाठ में टिप्पणी 40 देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. परमेश्वर के गवाह होने के बारे में पहले तीन तथ्यों पर जो आपको पता होने चाहिए, विचार करें (पिछले पाठ से)।
2. पाठ के अनुसार, गवाही देने के बारे में चौथी बात आपको क्या पता होनी चाहिए?
3. परमेश्वर द्वारा हमारी रक्षा किए जाने के बावजूद, हम किस प्रकार से भेद्य रहते हैं?
4. अध्याय 11 से ''पशु'' के बारे में हमें क्या पता चलता है?

5. ''पाप के आत्मविनाशी स्वभाव'' पाठ पर विचार करें कि उसमें गड्हे के बारे में क्या कहा गया है।
6. पाठ के अनुसार, ''वे अपनी गवाही दे *चुकेंगे* '' वाक्यांश का क्या महत्व है?
7. क्या दुष्ट की सेनाएं सुसमाचार के बढ़ने को रोक सकती हैं?
8. पृथ्वी वासियों को दो गवाहों के शव दफ़नाने की अनुमति क्यों नहीं दी गई?
9. आप सदोम, मिस्र और यरूशलेम (अर्थात, मसीह और प्रेरितों के समय वाले यरूशलेम) के बारे में क्या जानते हैं? ''बड़े नगर'' के *स्वभाव* के बारे में इन नामों से क्या पता चलता है? ''बड़े नगर'' के *भविष्य* के बारे में इन नामों से क्या पता चलता है?
10. पाठ के अनुसार, पांचवीं कौन सी बात है, जो आपको गवाही देने के बारे में पता होनी चाहिए?
11. सांकेतिक संख्या ''3-1/2'' के अर्थ पर विचार करें। पाठ के अनुसार ''3-1/2 *वर्ष* '' बनाम ''3-1/2 *दिन* '' का क्या महत्व है।
12. क्या आपको लगता है कि आयत 12 शारीरिक पुनरुत्थान या सांकेतिक (आत्मिक) पुनरुत्थान को दर्शाती है? जो भी हो, क्या आयत 12 हमें यह आशा देती है कि एक दिन हम जिलाए जाएंगे?
13. मनुष्यों पर भूकम्प का क्या असर हुआ? क्या आपको लगता है कि इसका अर्थ है कि उन्होंने मन फिराया?
14. दो गवाहों की कहानी से कुल मिलाकर आप पर क्या प्रभाव पड़ता है?

वध किए गए दो गवाह (11:7)

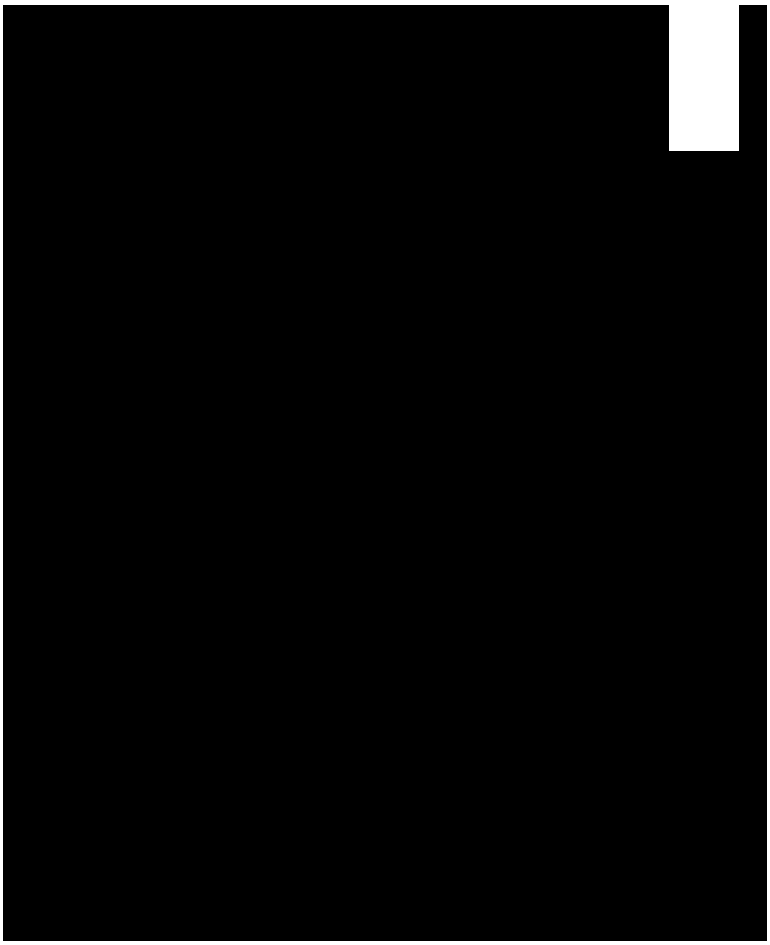

स्वर्ग में ऊपर जाते दो गवाह (11:12)